



नई शिक्षा नीति 2020 में वर्णित जीवन कौशल एवं उनका महत्व

¹रंजना यादव

शोधार्थी, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर

²प्रो. (डॉ) राकेश कुमार आजाद

प्राचार्य, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर

Email: dreamupscrack@gmail.com

सारांश:- आधुनिक समय में जितनी तीव्र गति से ज्ञान और तकनीकी का विस्फोट हुआ है। उतना ही तेजी से अनेक कौशलों की आवश्यकता भी अनुभव की गयी है। वे कौशल जो व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान खोजने, निर्णय लेने एवं विषम परिस्थितियों में संतुलन स्थापित कर सफल जीवन का निर्वहन करने में सक्षम बनाता है। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय का अत्यन्त महत्वपूर्ण दस्तावेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 भी विद्यार्थी के समग्र विकास में जीवन कौशलों के महत्व को स्वीकार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संवाद, सहयोग, टीम वर्क व लचीलपन जैसे जीवन कौशलों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। जीवन कौशलों के 21वीं सदी के कौशलों का अभिन्न अंग मानकर बालक के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन कौशल अभ्यास को शिक्षा से जोड़ने की बात पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा जीवन कौशलों को अनिवार्य रूप से शामिल करना इसके महत्व को स्पष्ट करता है। प्रस्तुत लेख में जीवन कौशल की अवधारणा व उसके महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द:- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी के कौशल, जीवन कौशल।

प्रस्तावना

वर्तमान युग वैश्विक युग है। वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है। चारों ओर परिवर्तन ही परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। परिवर्तन की इस क्रांति से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी, निजीकरण, उदारीकरण, ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य एवं स्वरूप दोनों में व्यापक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। परिवर्तित परिदृश्य में आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के समग्र विकास, कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक दक्षताओं के निर्माण पर बल देती है।

21वीं सदी में केवल साक्षरता या डिग्री प्राप्त करना और ज्ञान क्षेत्र में जानकारी प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए बालक में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, समस्या-समाधान, सहयोग, संचार क्षमता, नैतिक क्षमता, निर्णय क्षमता जैसे कौशलों की आवश्यकता होती है। ये कौशल व्यक्ति को बदलती सामाजिक परिस्थितियों के सापेक्ष ढलने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं।

21वीं सदी के कौशलों की व्यापक सूची में जीवन कौशल को विशेष रूप से शामिल किया गया है। जीवन कौशल व्यक्ति को सकारात्मक व्यवहार अपनाने और जीवन की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने की क्षमता प्रदान करते हैं। विशेषकर वर्तमान शैक्षिक समय में जीवन कौशल की प्रासंगिकता को नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में देखा जा सकता है।

नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, व्यावहारिक और कौशल आधारित बनाने पर बल देती है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों के बौद्धिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को विशेष महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान के प्रति आकर्षण एवं कुशल विकास करने के लिए यह प्रयास किया गया है कि शिक्षा केवल परीक्षा-केंद्रित न होकर जीवनोन्मुख और कौशल आधारित हो।

लेख का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित जीवन कौशल एवं उनके महत्व का विश्लेषण करना है।

“सा विद्या या विमुक्तये” (विष्णु पुराण)

इसका अर्थ है- “सच्ची विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे।” अर्थात् विद्या का उद्देश्य मुक्ति या स्वतंत्रता है, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक या व्यक्तिगत स्तर पर हो। इस प्रकार, शिक्षा केवल संस्कार देने के बजाय व्यक्ति को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना सिखाती है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को आत्म-विकास, आत्म-ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार का माध्यम माना गया है, जो आज के वैश्वीकरण के युग में पूर्णतः प्रासंगिक है।

वर्तमान समय को ज्ञान और सूचना का युग माना जाता है। यह युग तीव्र गति से परिवर्तनशील है, जिसके परिणामस्वरूप नवीन आयामों का निर्माण हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी के विकास ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को अत्यधिक प्रभावित किया है। डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा वैश्वीकरण के कारण समाज का स्वरूप बदलकर एक वैश्विक समुदाय के रूप में विकसित हो रहा है। ऐसे परिवर्तित सामाजिक और आर्थिक परिवेश में शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था- “मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।” यह कथन स्पष्ट करता है कि शिक्षा व्यक्ति के भीतर निहित संभावनाओं को विकसित करने की प्रक्रिया है। इसी प्रकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा- “सर्वोत्तम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएँ नहीं देती, अपितु हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में लयात्मक सामंजस्य स्थापित करती है।” इस विचार से स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनुष्य को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाती है तथा उसमें संतुलन पैदा करती है।

21वीं सदी में विश्व में विभिन्न तकनीकी प्रगति के कारण तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन सकारात्मक होने के साथ-साथ चुनौतीपूर्ण भी हैं। वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण एवं सूचना-तकनीकी प्रौद्योगिकी के कारण आने वाली चुनौतियाँ विद्यार्थियों में नए कौशलों और दक्षताओं की आवश्यकता की ओर संकेत करती हैं। 21वीं सदी का एक तिहाई हिस्सा निकल जाने पर कुछ आवश्यकताओं की मांग और तेजी से बढ़ी है। इन कौशलों एवं दक्षताओं को 21वीं सदी के कौशलों के नाम से जाना जाता है। 21वीं सदी के कौशल वे कौशल हैं जो व्यक्ति को अपने समुदाय, देश और दुनिया के विकास में प्रभावी योगदान देने के लिए आवश्यक हैं। ये कौशल क्षमताओं एवं

योग्यताओं का संग्रह हैं, जो आधुनिक परिवर्तनशील दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक माने जाते हैं। विशेषतः शिक्षा एवं कार्यस्थल पर इनकी भूमिका और अधिक बढ़ जाती है।

“21वीं सदी के कौशल” शब्द का अर्थ कौशल, कार्य की आदतें और चरित्र गुणों के व्यापक समूह से है, जिन्हें शिक्षकों, स्कूल सुधारकों, कॉलेज प्रोफेसर्स, नियोक्ताओं और अन्य लोगों द्वारा आज की दुनिया में सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, विशेष रूप से कॉलेज कार्यक्रमों और आधुनिक करियर तथा कार्यस्थलों में।

— Glossary of Educational Reform, 2016

21वीं सदी के कौशल ज्ञान, जीवन कौशल, करियर कौशल, आदतों और गुणों को संदर्भित करते हैं, जो आज की दुनिया में छात्र की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से उच्च शिक्षा, प्रशिक्षण, कार्यक्षेत्र और वयस्क जीवन में।

— Buckley, 2024, Panorama Education

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी के कौशलों को अर्जित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। वास्तव में यह प्रत्येक छात्र की आवश्यकता है।

21वीं सदी के कौशलों की आवश्यकता

21वीं सदी के कौशलों की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है-

1. कार्य क्षेत्र के लिए तैयारी करने के लिए।
2. आजीवन अधिगम एवं स्व-निर्देशित अधिगम के लिए।
3. अच्छे निर्णय लेने के लिए।
4. अनुकूलता एवं लचीलापन विकसित करने के लिए।
5. सहयोग और नेतृत्व क्षमता के लिए।
6. सफलता प्राप्त करने के लिए।

21वीं सदी के कौशलों के प्रकार

CBSE 2020 के अनुसार 21वीं सदी के कौशलों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है—

1. अधिगम कौशल — 4Cs

अधिगम कौशल के अंतर्गत 4C Skills का उल्लेख मिलता है, जिसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं-

1. Critical Thinking and Problem Solving (आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या समाधान)
2. Creativity and Innovation (सृजनात्मकता एवं नवाचार)
3. Collaboration (सहयोग)
4. Communication (संचार कौशल)

2. साक्षरता कौशल (IMT)

साक्षरता कौशल के अंतर्गत—

1. Information Literacy (सूचना साक्षरता)
2. Media Literacy (मीडिया साक्षरता)

3. Technological Literacy (प्रौद्योगिकी साक्षरता)

3. जीवन कौशल — FLIPS

जीवन कौशल के अंतर्गत सामान्यतः FLIPS कौशल से तात्पर्य है—

1. Flexibility and Adaptability (लचीलापन एवं अनुकूलता)
2. Initiative and Self Direction (पहल एवं स्व-निर्देशन)
3. Productivity and Accountability (उत्पादकता एवं जवाबदेही)
4. Social and Cross-Cultural Interaction (सामाजिक एवं अंतर-सांस्कृतिक अंतःक्रिया कौशल)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 21वीं सदी के कौशलों के अंतर्गत सम्मिलित कौशलों का समूह व्यापक है। इन कौशलों का विकास विद्यार्थियों के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। विषम परिस्थितियों में ऐसे कौशलों की आवश्यकता होती है, जो उन्हें समस्याओं का समाधान खोजने, निर्णय लेने तथा सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से मजबूत बनाने और निर्माण में सहायता प्रदान करें। इसी संदर्भ में जीवन कौशलों का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। जीवन कौशल व्यक्ति को आत्म-जागरूक बनाते हैं, उसे भावनात्मक रूप से संतुलित रखते हैं और उसे सामाजिक जीवन में सफल बनाने में सहायता करते हैं।

जीवन कौशल की अवधारणा

जीवन कौशल सामाजिक योग्यताओं एवं व्यवहारों का एक समूह है, जो व्यक्ति को प्रतिदिन के जीवन की चुनौतियों, मांगों एवं परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के योग्य बनाते हैं। ये कौशल व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन जीवन कौशल को इस प्रकार परिभाषित करता है—
“Abilities for adaptive and positive behaviour that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of everyday life.”

— WHO, 1997

"Life Skills are a set of abilities, attitudes and socio emotional competencies that enables individuals to learn make informed decisions and exercise rights to lead a healthy and productive life and subsequently become agent of change."

-UNICEF, 2019

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने जीवन कौशलों को अलग-अलग रूप में परिभाषित किया है। WHO, UNICEF व UNESCO जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में जीवन कौशल से संबंधित व्यापक विचार प्रस्तुत किये गये हैं। इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल व्यक्ति को दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाते हैं।

जीवन कौशलों का महत्व

जीवन कौशलों को अर्जित करने के अनेक कारण हैं, जो उनके महत्व को दर्शाते हैं। इनमें कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

1. निर्णय क्षमता को बढ़ाना।

2. संबंधों में सुधारा
3. अनुकूलता एवं लचीलेपन को बढ़ावा देना।
4. आत्मविश्वास में सुधारा

जीवन कौशलों के प्रकार

जीवन कौशलों को सामान्यतः तीन पहलुओं में विभाजित किया जाता है-

1. **सोच कौशल / चिंतन कौशल (Thinking Skills) :-** इसके अंतर्गत आत्म-जागरूकता, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, समस्या समाधान एवं निर्णय क्षमता को सम्मिलित किया जाता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में बेहतर ढंग से निपटने के लिए ये सभी कौशल अत्यंत आवश्यक हैं। किशोरों को विभिन्न चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करने के योग्य बनाने में ये कौशल सहायक हैं। सामान्यतः ये कौशल व्यक्ति के चिंतन से संबंधित हैं।
2. **सामाजिक कौशल (Social Skills):-** सामाजिक कौशल के अंतर्गत समानुभूति, अन्तर्वैयक्तिक कौशल, संचार कौशल, सक्रिय श्रवण कौशल एवं अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से व्यक्त करने की योग्यता जैसे कौशल सम्मिलित हैं।
3. **भावनात्मक कौशल (Emotional Skills):-** तनाव प्रबंधन, आत्म-प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण आदि कौशल भावनात्मक कौशल के अंतर्गत सम्मिलित होते हैं। आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए ये सभी कौशल आवश्यक हैं। भावनात्मक कौशल व्यक्ति को तनाव के कारणों एवं प्रभावों की पहचान करने के योग्य बनाते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में भी जीवन कौशलों को अत्यंत महत्व दिया गया है। एक प्रसिद्ध संस्कृत उक्ति है—**विद्या ददाति विनयम्।** अर्थात् विद्या से विनम्रता आती है और विनम्रता से व्यक्तित्व योग्य बनता है। यह विचार स्पष्ट करता है कि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास ही नहीं रहा, बल्कि नैतिक और सामाजिक विकास भी रहा है।

WHO द्वारा बताए गए प्रमुख जीवन कौशल

WHO ने व्यापक स्तर पर जीवन कौशलों का उल्लेख किया है, जो निम्नलिखित हैं—

1. आत्म-जागरूकता
2. समानुभूति
3. आलोचनात्मक चिंतन
4. रचनात्मक चिंतन
5. निर्णय क्षमता
6. समस्या समाधान
7. अन्तर्वैयक्तिक संबंध
8. प्रभावी संप्रेषण
9. तनाव प्रबंधन

10. भाव प्रबंधन

जीवन कौशल वे महत्वपूर्ण योग्यताएँ हैं, जिनकी सहायता से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करता है। जीवन कौशलों के महत्व को अनुभव करते हुए विभिन्न संगठनों जैसे WHO, UNICEF, CBSE एवं UGC ने शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशलों को सम्मिलित करने की महत्वपूर्ण सिफारिशों की हैं। यूनेस्को के अनुसार, जीवन कौशल शिक्षा समग्र, संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं सामाजिक क्षमताओं को विकसित कर किशोरों को उत्पादक जीवन में सहायक होनी चाहिए। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को अधिक समग्र और कौशल आधारित बनाने का प्रयास किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में जीवन कौशलों का महत्व

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी दस्तावेज है। इस शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक, लचीला तथा कौशल आधारित बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना भी होना चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 में जीवन कौशल आधारित शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। यह नीति विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, समस्या समाधान, संचार कौशल तथा सहयोग की भावना विकसित करने पर बल देती है। इन सभी क्षमताओं के विकास के लिए विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का विकास करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जीवन कौशल के द्वारा ही व्यक्ति का समग्र विकास संभव है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक और परियोजना आधारित बनाने पर जोर देती है। अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जुड़ते हैं और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। परियोजना आधारित अधिगम से उनमें निर्णय लेने, समस्या समाधान, चिंतन-विश्लेषण तथा रचनात्मक सोच जैसे कौशलों का विकास होता है। नई शिक्षा नीति 2020 में यह भी कहा गया है कि विद्यार्थियों को केवल पाठ्य-पुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों से भी परिचित कराया जाना चाहिए। इससे उनमें सहानुभूति, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलावों की दिशा दिखाते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्निर्माण की बात की गई है, ताकि वह आधुनिक वैश्विक परिवेश में न केवल समृद्ध हो, बल्कि विकसित भारत की संकल्पना को भी साकार कर सके। भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन कौशलों के पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत वेद, उपनिषद और भगवद्गीता जीवन कौशल सिखाते हैं। भारतीय ज्ञान जीवन के विभिन्न पक्षों, सुख-दुख, दैनिक जीवन के संघर्षों एवं उपायों को बताता है। वास्तव में जीवन कौशल क्या हैं, इसके बारे में भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यापक रूप से जानकारी मिलती है।

इस संदर्भ में तैत्तिरीय उपनिषद में वर्णित “पंचकोश” का प्राचीन भारतीय मॉडल महत्वपूर्ण है। पंचकोश के अंतर्गत पाँच स्तर बताए गए हैं, जो व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक हैं—

1. अन्नमय कोश
2. प्राणमय कोश
3. मनोमय कोश

4. विज्ञानमय कोश
5. आनंदमय कोश

ये सभी पंचकोश महत्वपूर्ण भारतीय मूल्य हैं, जो बालक एवं नागरिक दोनों के विकास में सहायक होते हैं। यह एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल के रूप में कार्य करता है। पंचकोश की दृष्टि से व्यक्ति के जीवनपर्यन्त अधिगम एवं समग्र विकास में सहायता मिलती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जीवन कौशलों के महत्व को स्वीकार करते हुए उनके विकास का समर्थन करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तन विद्यार्थियों में जीवन कौशलों के विकास को आधार प्रदान करते हैं। जीवन कौशल की अवधारणा नवीन नहीं है, बल्कि प्राचीन समय से भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार रही है।

वर्तमान में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मुख्य बिंदुओं के अंतर्गत समग्र विकास, बहुविषयक एवं लचीला पाठ्यक्रम, 21वीं सदी के कौशल तथा शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में जीवन कौशलों का समावेशन सम्मिलित है। इससे इसकी प्रासंगिकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है। जीवन कौशल की भूमिका शिक्षा, अधिगम, व्यावसायिक सफलता एवं व्यक्तिगत विकास में प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी के कौशलों के अंतर्गत जीवन कौशल की प्रमुख भूमिका है एवं नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में इनके विकास के लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया गया है। NEP 2020 शिक्षा-पाठ्यक्रम संरचना, मूल्यांकन प्रणाली, शिक्षण में परिवर्तन एवं समग्र विकास को महत्व देकर जीवन कौशलों को मुख्य साधन मानती है। शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशलों को उचित स्थान देकर ही विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक रूप से सफल होंगे, बल्कि सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में भी अधिक सक्षम बन सकेंगे।

जीवन कौशल शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान

यद्यपि जीवन कौशल का महत्व व्यापक स्तर पर स्वीकार किया जा चुका है, परंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिनके लिए व्यापक चिंतन और प्रयास करने की आवश्यकता है। सबसे बड़ी चुनौती संरचनात्मक शब्दावली और मूल्यांकन प्रक्रिया की स्पष्टता की है। जीवन कौशलों के मानकों में अनेक विविधताएँ पाई जाती हैं। शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव भी जीवन कौशलों को शिक्षा में शामिल करने की एक प्रमुख चुनौती है। शिक्षकों के अंदर पाठ्यक्रम सामग्री, आकलन और शिक्षण विधियों में एकीकरण का अभाव है। इन कमियों के समाधान के लिए आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार किए जाएँ। शिक्षकों को जीवन कौशल आधारित शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। भाषा-शैली और जीवन कौशल की स्पष्ट शब्दावली के साथ राष्ट्रीय स्तर पर एक ही फ्रेमवर्क निर्मित किया जाए, जिससे असमंजस की स्थिति न बने।

इसके अतिरिक्त सामुदायिक स्तर पर भी जागरूकता अत्यंत आवश्यक है, ताकि मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित कार्यक्रमों को अनावश्यक गतिविधि न समझा जाए। इसके अतिरिक्त समग्र मूल्यांकन प्रणाली गठित की जाए, जो इसकी प्रगति का आकलन कर सके।

संदर्भ सूची

1. American India Foundation. (2018). *Handbook of activities on life skills*.
2. Bharath, S., Kishore Kumar, K. V., & Vranda, M. N. (2005). *Health promotion using life skills approach for adolescents in schools (8th, 9th and 10th standard): English version*. NIMHANS-WHO (SEARO) Collaboration.

3. Great Schools Partnership. (2016, August 25). *21st century skills. The Glossary of Education Reform.* 21st Century Skills Definition
<https://share.google/v6z2pxna4pobvueWc>
4. Ministry of Human Resource Development, Government of India. (2020). *National education policy 2020.*
https://static.pib.gov.in/WriteReadData/userfiles/NEP_Final_English_0.pdf
5. UNICEF. (2019). *Comprehensive life skills framework: Rights-based and life cycle approach to building skills for empowerment.*
<https://www.unicef.org/india/media/2571/file/Comprehensive-lifeskills-framework.pdf>
6. Singh, B. D., & Menon, R. (2015). *Life skills in India: An overview of evidence and current practices in our education system.* Central Square Foundation.
- 7th Swayam (2025, Feb 14). Life Skills. Youtube.
<https://youtu.be/QekgdxU5o4U?si=NsjSZLd1bfy177lJ>